जैविक खेती (प्राकृतिक एवं टिकाऊ खेती)

अनिता ध्यानी
रा.ज.सं.,रूड़की

जैविक खेती

संपूर्ण विश्व में बढ़ती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या है, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की बढ़ती हुई माँग के कारण मनुष्य द्वारा खाद्य उत्पादनों की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह–तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थों के बीच आदान–प्रदान के चक्र का प्रभावित करता है, जिससे भूमि की उर्वरक शक्ति खराब हो जाती है तथा साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है, जिससे मनुष्य का जीवन कष्टदायक हो जाता है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातारण के अनुसार खेती की जाती थी जिससे जैविक व अजैविक पदार्थों का आदान–प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) निरन्तर चलता रहता था, जिससे जल, भूमि, वायु, वातावरण दूषित नहीं होते थे। खेती के साथ गौ–पालन भी किया जाता था। कृषि एवं गौ–पालन संयुक्त रूप से अत्यधिक लाभदायी था, जो प्राणी व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था, लेकिन बदलते हुए वातावरण में गौ–पालन धीरे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रासायनिक खादों व जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है, जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थों के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है, हम रासायनिक खादों व जहरीली खादों व कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों व दवाइयों का उपायोग कर, अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं जिससे जल, भूमि व वातारण शुद्ध हो जायेगा व मनुष्य का जीवन स्वस्थ होगा।

भारत वर्ष में अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है, और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रान्ति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है, अधिक उत्पादन के लिए रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का उपयोग करना पड़ता है, जिसके प्रभाव से जल, भूमि व वातावरण दूषित हो जाता है।

मध्य प्रदेश में सर्वप्रथम 2001–02 में जैविक खेती का आन्दोलन चलाकर प्रत्येक जिले के प्रत्येक विकास खण्ड के एक गाँव में जैविक खेती प्रारंभ की गई और इन गाँवों को "जैविक गाँव" से जाना गया, इस प्रकार प्रथम वर्ष में 313 ग्रामों में जैविक खेती की शुरूआत हुई, इसके बाद 2002–03 में द्वितीय वर्ष में 1565 गाँवों में जैविक खेती हुई, वर्ष 2006 व 07 3130 गाँवों में जैविक खेती हुई, मई 2002 में भोपाल में जैविक खेती पर सेमीनार आयोजित किया गया। जिसमें राष्ट्रीय विशेषज्ञों एवं जैविक खेती करने वाले कृषकों ने भाग लिया व प्रत्येक जिले में जैविक खेती के प्रचार–प्रसार हेतु चलित झाँकी, पोस्टर्स बैनर्स, नाटक व कठपुतली प्रदर्शन भी जैविक खेती के लिए प्रसार–प्रचार का माध्यम बनी जिससे किसानों में जन जागृति फैली।

जैविक खेती से होने वाले लाभ –

(1). कृषकों की दृष्टि से – (क). भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है। (ख). सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है। (ग). रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है । (घ). फसलों के उत्पादन में वृद्धि।

(2). मिट्टी की दृष्टि से – (क). जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। (ख). भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है। (ग). भूमि में पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

(3). पर्यावरण की दृष्टि से– (क). भूमि में जल के स्तर में वृद्धि होगी। (ख). मिट्टी खाद पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से प्रदूषण में कमी आ जाती है। (ग). कचरे का उपयोग खाद बनाने में होने से बीमारियों में कमी आती है। (घ). फसल उत्पादन की लागत में कृषि व आय में वृद्धि।

जैविक खेती हेतु प्रमुख जैविक खाद एवं दवाईयां –

(1). नाडेय, (2). बायोगैस स्लरी, (3). वर्मी कम्पोस्ट, (4). हरी खाद, (5). जैव उर्वरक (कल्चर), (6). गोबर की खाद, (7). पिट कम्पोस्ट, (8). मुर्गी की खाद।

जैविक खाद तैयार करने के कृषकों के अन्य अनुभव –

(1). भभूत अमृतवमी।
(2). अमृत संजीवनी।
(3). मटका खाद।

जैविक खेती की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है, अर्थात् जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों का उत्पादन बढ़ाने में पूर्णतः सहायक है, व पूर्णतः वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक लाभदायक है, जैविक विधि द्वारा खेती करने में उत्पादन अधिक खरे उतरते हैं, जिसके फलस्वरूप उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आधुनिक समय में निरंतर बढ़ती हुई जनसंख्या पर्यावरण प्रदूषण भूमि की उर्वरक शक्ति का संरक्षण एवं मानव एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यंत लाभदायक है।

"जय जवान"
"जय किसान"